Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय चित्रकला के वर्तमान आयाम व प्रो0 भगवती प्रकाश काम्बोज

कुलदीप कुमार* डॉ. निशा गुप्ता**

* शोधार्थी (चित्रकला) जे0 के0 पी0 पीजी कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) भारत
** एसोसिएट प्रोफसर (चित्रकला) जे0 के0 पी0 पीजी कॉलेज, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – चित्रकला का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना मानव सभ्यता का विकास। जैसे जैसे मानव का विकास हुआ वैसे –वैसे उसकी कला भी विकसित होती गयी। कला का उदय मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक है। आधुनिक कला विभिन्न आयामों के साथ पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है। भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का प्रारम्भ 20वीं सदी से माना जाता है। अवनीन्द्रनाथ ठाकुर भारतीय चित्रकला के पुनरूद्धारक रूप में प्रतिष्ठित हुए। इन्होंने देशी–विदेशी शैलियों का अध्ययन किया। नन्दलाल बसु अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रिय शिष्यों में से एक रहे हैं, जिन्होंने जलरंग व टेम्परा में ही प्राय: अपने चित्रों को बनाया है। कला और पहाड़ों के प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति प्रो. काम्बोज का लगाव जन्मजात है। प्रो. भगवती प्रकाश काम्बोज का जन्म 15 अगस्त 1928 ई. में देहरादून में हुआ था। इनके पिता का नाम गौरीशंकर था। बचपन से ही इनमें चित्रकला व प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति विशेष रूचि रही।

प्रस्तावना – चित्रकला का इतिहास उतना ही पुराना है, जितना मानव सभ्यता का विकास। मनुष्य ने जिस समय प्रकृति की गोद में आँखें खोली उसी समय से ही उसने अपनी मूक भावनाओं को तूलिका के माध्यम से गुफाओं व चट्टानों की भित्तियों पर अभिव्यक्त किया। उसके जीवन की कोमल भावनाएँ तथा संघर्षमय जीवन की सजीव झांकियाँ उस समय की कलाकृतियों में आज भी सुरक्षित है। जैसे जैसे मानव का विकास हुआ वैसे –वैसे उसकी कला भी विकसित होती गयी। कला का उदय मानव की सौन्दर्य भावना का परिचायक है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में– 'कला में मनुष्य अपनी अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है।'

भारतीय चित्रकला का विकास मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ ही आरम्भ होता है। आरम्भ से ही मनुष्य अपनी मन:स्थिति को तूलिका के माध्यम से चट्टानों व गुफाओं की भित्तियों पर अभिव्यक्त कर सहज आनन्द की अनुभूति करता आया है।

किसी समय विशेष में मनुष्य जिस माहौल में रहा है अर्थात् उसके बीते असभ्य व सभ्य जीवन, शासक के आचार विचार, धार्मिक प्रभाव आदि ने चित्रकार की अभिव्यक्ति को गहराई से प्रभावित किया है। इसी कारण चित्रकार ने कभी स्वतंत्र होकर चित्रण किया तो कभी अपने संरक्षक को खुश करने के लिए। धार्मिक भावना ने मानव हदय को कठोर , हिंसक व आदिम प्रवृति से सहज कोमल मनोंभावों की ओर रूपान्तरित किया। बौद्ध धर्म का इसमें प्रमुख स्थान रहा है। गोतम बुद्ध से प्रभावित होकर अनेक बौद्ध भिक्षुओं ने अजन्ता की जातक कथाओं पर आधारित भित्ति चित्रों का निर्माण किया। ऐसा लगता है मानो असंख्य बौद्ध भिक्षु अपनी छैनी तथा तूलिका के माध्यम से सृजन करते हुए भगवान बुद्ध की साधना में लीन हो गये। इन भित्ति चित्रों पर किसी चित्रकार का नाम नहीं मिलता, लगता है कि गुरू–शिष्य के मधुर सम्बन्ध और समर्पण की भावना इन चित्रों में उतर आई हो। सम्भवत: शिष्य ने इसलिए अपना नाम नहीं लिखा क्योंकि उसमें उसके गुरू का भी कार्य था और गुरू ने इसलिए नहीं लिखा कि उसमें शिष्य का भी चित्रण कार्य था।

पोथी चित्रण में बौद्ध धर्म से प्रेरित पाल चित्रशैली तथा जैन धर्म से प्रेरित अपभ्रंश चित्रशैली ने ताडपत्र चित्रण मे प्रसिद्धि पाई।राजस्थानी शैली की मेवाड, मारवाड, हाडौती, ढूँढाडी शैलियाँ लघु चित्रों के रूप में फली फूली। किशनगढ चित्रशैली में निहालचन्द द्वारा बनाये गये बनी–ठनी के सौन्दर्यपूर्ण चित्र को भारतीय मोनालिसा की संज्ञा दी जाती है। भारतीय और ईरानी शैलियों के योग से बनी मुगल चित्रशैली ने अकबर, जहॉगीर, शाहजहाँ के समय में विशेष प्रसिद्धि पाई व शासक ने अपने शासक की रूचि के अनुरूप चित्रण किया। पहाडी चित्रशैली में भगवान कृष्ण की लीलाओं का बडा सुन्दर चित्रण किया गया।

अंग्रेजी शासन में पनपी कम्पनी शैली में चित्रकारों ने अंग्रेज अधिकारियों के अनुरूप चित्रण किया। पाश्चात्य प्रभाव भारतीय कला पर स्पष्ट आने लगा। राजा रविवर्मा ने यूरोपीय तकनीक से प्रभावित होकार तैल माध्यम में पौराणिक चित्र बनाये। अवनीन्द्रनाथ टैगोर के प्रयासों से चित्रकला के विकास की यह धारा बंगाल शैली से होते हुए आधुनिक कला संगठनों की ओर बढती चली गयी। आज कलाकार अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति के लिए स्वतन्त्र चित्रण कर रहा है।

मुख्य भाग – आधुनिक कला विभिन्न आयामों के साथ पल्लवित एवं पुष्पित हो रही है। भारतीय चित्रकला के आधुनिक युग का प्रारम्भ 20वीं सदी से माना जाता है। राजा रवि वर्मा केरल के प्रसिद्ध कलाकार थे जिन्होंने यूरोपियन शैली का अनुकरण करके भारतीय देवी–देवताओं तथा पौराणिक व्यक्तियों के चित्रों को तैल माध्यम में चित्रित किया है। वे भारत में तैल–चित्रण तकनीक को प्रारम्भ करने वाले अग्रणी कलाकार के रूप में जाने जाते हैं। श्रीकृष्ण और बलराम, रावण, सीता और जटायु, शकुन्तला, इन्द्रजीत की विजय, हरिश्चन्द्र आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं।

अवनीन्द्रनाथ ठाकुर भारतीय चित्रकला के पुनरूद्धारक रूप में प्रतिष्ठित हुए। इन्होंने देशी–विदेशी शैलियों का अध्ययन किया। बाद में ई0वी0 हैवेल की प्रेरणा के फलस्वरूप ही भारतीय कला के स्रोत अजन्ता, एलोरा तथा राजपूत शैलियों का भी अध्ययन किया। भारतीय कला को विदेशी दासता से मुक्त कराने में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। इन्होंने जापानी चित्रकारों के प्रभाव

से एक नई विधि 'वाश टैकनीक' को जन्म दिया।

नन्दलाल बसु अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के प्रिय शिष्यों में से एक रहे हैं, जिन्होंने जलरंग व टेम्परा में ही प्राय: अपने चित्रों को बनाया है। साथ ही आपने वाश टैकनीक में भी अनेक प्रसिद्ध चित्रों की रचना की है। हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन की चित्र सज्जा में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

'भारतीय कला-परम्परा में विनोद बिहारी मुखर्जी का योगदान भी बहुत महत्वपूर्ण है। आपकी कला में विविधता है। भित्ति चित्र, कोलाज, वुडकट तथा केलीग्राफी आदि सभी प्रकार का कार्य आपने किया है। मुखर्जी की कला भारत की आधुनिक चित्रकला के विकास की वह कड़ी है जिसने उसे ऐसी स्वायत्तता प्रदान की जिसका आज वह सुख भोग रही है। आपने अतीत को अनदेखा नहीं किया बल्कि उसके आवश्यक पक्षों को नये युग के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया। पुल, जंगल, मन्दिर का घण्टा तथा मध्यकालीन हिन्दी सन्त आपकी कुछ प्रसिद्ध कृतियाँ है।'[1]

अमृता शेरगिल एक प्रतिभापूर्ण नारी-कलाकार थी। आज जब हम भारतीय चितेरों की बात करते हैं, तो अमृता का नाम आते ही एक ऐसा व्यक्तित्व सामने आ खड़ा होता है, जिसकी कला पूर्व और पश्चिम की कला शैलियों के संगम के रूप में ही नहीं बल्कि भारत में आधुनिक कला के जन्मदाता के रूप में प्रतिष्ठित की जा सकती है। अमृता शेरगिल पहली भारतीय महिला थी जिन्होंने बीस वर्ष की अल्पायु में ही विदेशों में अपना सिक्का जमा लिया था। वधु का शृंगार, केले बेचते हुए, हाट जाते हुए, गणेश-पूजा, हल्दी पीसती औरतें, चारपाई पर विश्राम करती स्त्री, आदि आपके प्रसिद्ध चित्रों में से हैं।

'दाढ़ी व जुल्फों के श्वेत बालों से आवृत नारंग हँसमुख चेहरा, सफेद खादी का कुर्ता-पायजामा पहने, नंगे पैर, लम्बे कद का, लम्बे डग भरता व्यक्तित्व था एम0एफ0हुसैन का, उस हुसैन का जो स्वयं एक जिन्दा तस्वीर थे। ख्याति तो यूँ अनेक भारतीय चित्रकारों को मिली, पर प्राय: कॉफी हाउस में तथा युवावर्ग के बीच जब कला की चर्चा होती है तो हुसैन का नाम अवश्य अपने आप आ जायेगा। जो सम्मान व लोक प्रियता पिकासो को मिली है वही भारत में हुसैन को दिलखोलकर मिली है, सभी ओर से मिली है। सन् 1973 ई0 में गणतन्त्र दिवस पर भारत सरकार ने पद्म भूषण की उपाधि से हुसैन को सम्मानित किया था।'[2]

हुसैन बुनियादी तौर पर एक प्रतीकवादी चित्रकार थे जिन्होंने असंख्य चित्रों की रचना की हैं। चित्रों में घोड़े की आकृति हुसैन का प्रतीक बन चुके थे। वहीं दूसरी ओर 'रजा की रंगों के प्रति संवेदनशीलता निरन्तर बढ़ती गयी है।'

कला और पहाड़ों के प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति प्रो. काम्बोज का लगाव जन्मजात है। नई सृजनात्मक प्रकृति की पहचान उनके काम में स्पष्ट दिखलाई पड़ती है। प्रो. भगवती प्रकाश काम्बोज का जन्म 15 अगस्त 1928 ई. में देहरादून में हुआ था। इनके पिता का नाम गौरीशंकर था। बचपन से ही इनमें चित्रकला व प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति विशेष रूचि रही।

'प्रो0 काम्बोज का विवाह 31, जनवरी सन् 1959 में पारिवारिक रीति-रिवाज के अनुसार श्रीमती इन्दिरा से हुआ। इनकी पत्नी की शिक्षा बी0ए0 थी। उस समय ग्रेजुएट होना बहुत बडी बात मानी जाती थी। श्रीमती इन्दिरा तीन भाईयों में अकेली बहन थी। प्रो0 काम्बोज की दो पुत्रियाँ और एक पुत्र है। सबसे बडी पुत्री श्रीमती श्रुति काम्बोज ने एम0एस0सी0 रसायन विज्ञान से की तथा एम0 फिल0 की डिग्री प्राप्त की। डॉ0 ऋचा काम्बोज ने नेशनल म्यूजियम से एम0ए0 हिस्ट्री ऑफ आर्ट से किया और गाल्ड मेडलिस्ट रही तथा डॉक्टरेट की डिग्री भी प्राप्त की। ये एम0 के0 पी0 पीजी कॉलेज, देहरादून में विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। इस प्रकार इनका पूरा परिवार शिक्षा के क्षेत्र से जुडा रहा। प्रो0 काम्बोज का जीवन बहुत ही आनन्द से व्यतीत हो रहा था अचानक ही फरवरी 2016 में इनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया।'[3]

इन्होंने चित्रकला में परास्नातक की डिग्री डी.ए.वी. पी.जी. कॉलेज देहरादून से प्राप्त की। ये मृत्युपर्यन्त कला सृजन में सलंग्न रहे तथा विभिन्न एकल तथा सामूहिक कला प्रदर्शनियों में प्रतिभागिता करते रहे। इन्होंने देहरादून में कला के क्षेत्र को विस्तार देने के लिए अथक प्रयास किये। प्रो. बी.पी. काम्बोज अपनी कलाकृतियों के माध्यम से जनमानस के हृदय में सौन्दर्य रूपी दीपक को प्रकाशित करना चाहते थे। वे समाज को अध्यात्मिकता, आपसी प्रेम, सौहार्द की भावना, समाज सेवा तथा देश-भक्ति का संदेश देना चाहते थे। उनके चित्रों में प्रकृति के प्रति प्रेम और लगाव स्पष्ट झलकता है। उन्होंने अपने चित्रों में लकड़ी के प्राकृतिक पोत का प्रभाव सौन्दर्यपूर्ण ढंग से दर्शाया है। बुश से छिटकने के बाद उनके भावों को रंगों ने प्रेरणा के नये आयाम दिये है। निरंतर नई सृजनात्मक प्रवृति की पहचान बन चुके इस महान शख्सियत की कृतियों ने सरहद की सीमाओं को लांघा है। प्रो. काम्बोज जी की कला के प्रति रूचि, लगन व निष्ठा के मूल मन्त्र को साबित करने का सशक्त उदाहरण है। उन्होंने ड्राइंग एण्ड पेंन्टिग में एम.ए. किया और एक चित्रकार के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।

राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथिका, नई दिल्ली तथा ललित कला अकादमी में आपका कार्य प्रदर्शित होता रहा। उन्होंने उत्तरांचल में कला की गतिविधियों को गति प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किये। कलाधरोहर के सरंक्षण तथा प्रतिभावों को संगठित करने के उद्देश्य से उन्होंने वहाँ उत्तरांचल कला परिषद का गठन किया। इस परिषद् का अध्यक्ष इन्हें ही नियुक्त किया गया। इन्होंने सरकार को कला की चेतना जगाने के लिए सुझाव दिये, जिससे इन्हें सरकार की ओर से सहयोग भी मिला। देहरादून में पहली प्रदेश स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे नवोदित कलाकारों को आगे बढ़ने का अवसर मिला। वे आगरा कॉलेज आगरा में कला विभाग में फैकल्टी ऑफ डीन रहे। वे कला शिक्षा में आदर्श शिक्षक की भूमिका को हमेशा प्रभावपूर्ण मानते थे। उनका मानना था कि हमारी शिक्षण पद्धति में मोटिवेशन नहीं है, इसी कमजोरी ने कला से जुड़े लोगों को ऐसी छूट प्रदान की है, जो नवोदित कलाकार सीखने की उम्र में अवार्ड के सपने देखने लगते है। मूल लक्ष्य से भटककर श्रेष्ठता को छूना असम्भव ही है। युवाओं का समय से पहले अधिक महत्वकांक्षी होना कला के क्षेत्र के लिए लाभप्रद नहीं है। वे कहते थे कि आधुनिक कला शैली से कलाकार प्रभावित है और कुछ नया करने की ललक में निरंतर परिवर्तन आम हो गया है।

कला और कलाकार के प्रचार-प्रसार के लिये अब छोटे-बड़े शहरों में कला वीथिकाएँ खुल गई है, जिनके द्वारा कलाकारों को प्रसिद्धि भी प्राप्त हो रही है। कला को जन-साधारण तक पहुँचाने तथा नये कलाकारों को आगे आने के अवसर प्रदान कर रही वीथिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. समकालीन कला, अंक 19, जून 2001, पृष्ठ संख्या 03
2. आधुनिक भारतीय चित्रकला डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल पृष्ठ संख्या 52
3. चिन्मय मेहता, उत्तराँचल की कला प्रकृति पर्यावरण एवं समाज से प्रतिबद्ध चित्रकार काम्बोज क कला सम्पदा एव वैचारिकी, अंक 10-मई-जून 2004